पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में –

विविध सम्प्रदायों का योगदान

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में विभिन्न सम्प्रदायों ने अपना योगदान दिया। जिनका वर्णन इस प्रकार है

राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय

राष्ट्रीयतावादी सम्प्रदाय में वे विद्वान आते हैं, जो मानते हैं कि देश में प्रयुक्त किए जाने वाली पारिभाषिक शब्दावली के लिए केवल संस्कृत भाषा के शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विचार के प्रवर्त्तक डॉ॰ रघुवीर थे। उन्होंने अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने इस विषय में निम्न मत प्रस्तुत किए –

(i) शब्द और विचार एक-दूसरे से पूर्ण रूप से संबंधित होते हैं। नए विचारों के साथ नए शब्दों की आवश्यकता होती है।

(ii) हम एक भी नए शब्द को विदेशी भाषा से नहीं ले सकते।

(iii) संस्कृत में बनाए गए शब्द पारदर्शी और पूर्ण रूप से स्पष्ट होंगे।

(iv) संस्कृत में 800 धातुएँ, 80 प्रत्यय और 26 उपसर्ग हैं। जिसमें लाखों-करोड़ों शब्द सरलता से बनाए जा सकते हैं।

(v) हमें नए शब्द संस्कृत से ही लेने होंगे या उन्हे संस्कृत के आधार पर रचने होंगे।

Scanned with CamScanner

(vi) भारतीय नौजवान और वैज्ञानिक संस्कृत पर आधारित पारिभाषिक शब्दों को सरलता से समझ पाएंगे।

दूसरी ओर देश के विद्वान मानते हैं कि राष्ट्रीयतावादी विचारकों के इन विचारों को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि वे हिन्दी में प्रचलित विदेशी तो क्या देशी और तद्भव शब्दों को भी ग्रहण करने से इन्कार करते हैं। इसका परिणाम यह होगा कि पारिभाषिक शब्दावली आवश्यकता से भी अधिक जटिल हो जाएगी और भाषा में उसका प्रयोग सरलता से नहीं हो पाएगा।

इस संदर्भ में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का मानना है कि पारिभाषिक शब्दावली सामान्य बोलचाल में ही नहीं आती। यह तो केवल विशेषज्ञों के द्वारा ही प्रयुक्त की जाती है। यह शब्दावली तो भावी पीढ़ी के लिए है। इसलिए इसका जटिल होना स्वाभाविक ही है।

इधर भारत के ही कुछ प्रयोगवादी अथवा हिन्दुस्तानी संप्रदाय के विद्वानों का मानना है कि भारत एक मिली-जुली संस्कृति है। इसलिए पारिभाषिक शब्द भी मिली-जुली भाषाओं के शब्दों के सहप्रयोग से बने।

Scanned with CamScanner